(पूजा नं. 2)

श्री सुरमन्यु महर्षि पूजा

–स्थापना-(दोहा) –

श्री सुरमन्यु ऋषीश की, पूजा करूँ त्रिकाल।
आह्वानन स्थापना, करूँ बसो मन आन।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसुरमन्युऋषीश्वर! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीसुरमन्युऋषीश्वर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीसुरमन्युऋषीश्वर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

–अष्टक (सोरठा छंद) –

स्वर्णकलश में नीर, लेकर जलधारा करूँ।
श्री सुरमन्यु ऋषीश, पूजा कर भवदुख हरूँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसुरमन्युमहर्षये जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित चन्दन लाय, गुरुपद में चर्चन करूँ।
श्री सुरमन्यु ऋषीश, पूजा कर भवदुख हरूँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीसुरमन्युमहर्षये संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल अक्षत लाय, गुरुपद में अर्पण करूँ।
श्री सुरमन्यु ऋषीश, पूजा कर भवदुख हरूँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसुरमन्युमहर्षये अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प सुगंधित लाय, गुरुपद में अर्पण करूँ।
श्री सुरमन्यु ऋषीश, पूजा कर भवदुख हरूँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीसुरमन्युमहर्षये कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मीठे व्यंजन लाय, गुरुपद में अर्पण करूँ।
श्री सुरमन्यु ऋषीश, पूजा कर भवदुख हरूँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीसुरमन्युमहर्षये क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णिम दीप जलाय, गुरुपद की आरति करूँ।
श्री सुरमन्यु ऋषीश, पूजा कर भवदुख हरूँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीसुरमन्युमहर्षये मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि में धूप जलाय, गुरुपद का अर्चन करूँ।
श्री सुरमन्यु ऋषीश, पूजा कर भवदुख हरूँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसुरमन्युमहर्षये अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष हेतु फल लाय, गुरुपद में अर्पण करूँ।
श्री सुरमन्यु ऋषीश, पूजा कर भवदुख हरूँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीसुरमन्युमहर्षये मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य थाल भर लाय, गुरुपद में अर्पण करूँ।
श्री सुरमन्यु ऋषीश, पूजा कर भवदुख हरूँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीसुरमन्युमहर्षये अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लेकर प्रासुक नीर, शांतीधारा मैं करूँ।
श्री सुरमन्यु ऋषीश, पूजा कर भवदुख हरूँ।।10।।

शांतये शांतिधारा।

विविध पुष्प को लाय, पुष्पांजलि गुरुपद करूँ।
श्री सुरमन्यु ऋषीश, पूजा कर भवदुख हरूँ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–दोहा –

सप्तऋषी मण्डल रचा, पूजा हेतु महान।
पुष्पांजलि करके वहाँ, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–शंभु छंद –

राजा श्रीनन्दन की रानी, धारिणी पुत्र सुरमन्यु कहे।
प्रीतिंकर जिनवर के समीप, दीक्षा ले तपकर ऋद्धि लहें।।

उन चारणादि ऋद्धीधारी, मुनिवर की पूजा सुखकारी।
उनकी ऋद्धी से मिल जाती, भौतिक आत्मिक संपति सारी।।2।।

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वितश्रीसुरमन्युमहर्षये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र–**ॐ ह्रीं श्रीसुरमन्युमहर्षये नमः।** (9, 27 या 108 बार जाप्य करें)

जयमाला

–शंभु छंद –

हे मुनिवर! तुम तो श्रीजिनवर के, लघुनंदन कहलाते हो।
हे ऋषिवर! तुम तो जिनशासन का, सच्चा रूप दिखाते हो।।
हे यतिवर! तुम तो जिनशास्त्रों को, जीवन में अपनाते हो।
हे गुरुवर! तुम तो शिवपथ पर चल, शिवपथ को दरशाते हो।।1।।

श्री नंदन नृप के प्रथम पुत्र, ने राजमहल का सुख छोड़ा।
आतम सुख प्राप्ती हेतु उन्होंने, परिकर से नाता तोड़ा।।
जब पिता चले दीक्षा लेने, तब उनको भी वैराग्य हुआ।
नश्वर सांसारिक वैभव को, तज शिवपथ में अनुराग हुआ।।2।।

श्रीनंदन मुनि ने तप करके, कैवल्यज्ञान को प्राप्त किया।
पुत्रों ने भी तप कर करके, नाना ऋद्धी को प्राप्त किया।।
उनकी ऋद्धी से अन्य प्राणियों, ने ही लाभ उठाया था।
सुरमन्यु ऋद्धिधारी मुनिवर ने, ज्ञानामृत बरसाया था।।3।।

वे निजचर्या में रत रहकर, जिनकल्पी मुनि कहलाते थे।
चौमास में भी इसलिए कहीं भी, वे विहार कर जाते थे।।
उनके विहार से जीवों की, हिंसा न कभी भी होती थी।
व्रत समिति गुप्तियों से सदैव, रक्षा उनकी खुद होती थी।।4।।

उन श्रीसुरमन्यु मुनी को हम, पूर्णार्घ्य चढ़ाने आए हैं।
आठों द्रव्यों का थाल सजा, जयमाला गाने आए हैं।।

''चन्दनामती'' उन ऋद्धी से, हम लाभ उठाने आए हैं।
रत्नत्रय की वृद्धी हेतू, तप शक्ती पाने आए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीसुरमन्युमहर्षये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–दोहा –

सप्तऋषी की अर्चना, देवे सौख्य महान।
इनके पद की वंदना, करे कष्ट की हान।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

(पूजा नं. 3)

श्रीमन्यु महर्षि पूजा

–स्थापना-(माता तेरे चरणों में...) –

गुरुवर तेरे चरणों में हम वंदन करते हैं।
श्रीमन्यु मुनीश्वर का, हम अर्चन करते हैं।।टेक.।।
सप्तर्षि में श्रीमन्यू, हैं दुतिय ऋषीश्वर जी।
चारणऋद्धी संयुत, उन महामुनीश्वर की।।
उनका आह्वानन कर, स्थापन करते हैं।
श्रीमन्यु मुनीश्वर का, हम अर्चन करते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री श्रीमन्युमहर्षे! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री श्रीमन्युमहर्षे! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री श्रीमन्युमहर्षे! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

–अष्टक (माता तेरे चरणों में....) –

गुरुवर तेरे चरणों में, हम वंदन करते हैं।
श्रीमन्यु मुनीश्वर का, हम अर्चन करते हैं।।टेक.।।
गंगानदि का जल ले, त्रयधारा करना है।
निज जन्म जरामृत्यू, को भी क्षय करना है।।
इस हेतू गुरु पद में, हम वन्दन करते हैं।
श्रीमन्यु मुनीश्वर का, हम अर्चन करते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री श्रीमन्युमहर्षये जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुवर तेरे चरणों में, हम वंदन करते हैं।
श्रीमन्यु मुनीश्वर का, हम अर्चन करते हैं।।टेक.।।
मलयागिरि चन्दन ले, गुरुपद में चर्चन है।
भवताप नष्ट होवे, करना मन शीतल है।।
इस हेतू गुरु पद में, हम वन्दन करते हैं।
श्रीमन्यु मुनीश्वर का, हम अर्चन करते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री श्रीमन्युमहर्षये संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुवर तेरे चरणों में, हम वंदन करते हैं।
श्रीमन्यु मुनीश्वर का, हम अर्चन करते हैं।।टेक.।।
मोतीसम तन्दुल ले, त्रयपुंज चढ़ाना है।
दुःखों का क्षय करके, अक्षयपद पाना है।।
इस हेतू गुरु पद में, हम वन्दन करते हैं।
श्रीमन्यु मुनीश्वर का, हम अर्चन करते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री श्रीमन्युमहर्षये अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुवर तेरे चरणों में, हम वंदन करते हैं।
श्रीमन्यु मुनीश्वर का, हम अर्चन करते हैं।।टेक.।।
फूलों को चुन-चुन कर, उपवन से ले आए।
गुरुपद में चढ़ाने से, विषयाशा नश जाए।।
इस हेतू गुरु पद में, हम वन्दन करते हैं।
श्रीमन्यु मुनीश्वर का, हम अर्चन करते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री श्रीमन्युमहर्षये कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुवर तेरे चरणों में, हम वंदन करते हैं।
श्रीमन्यु मुनीश्वर का, हम अर्चन करते हैं।।टेक.।।
पूरनपोली आदिक, नैवेद्य बना लाए।
गुरुपद में चढ़ाने से, क्षुधरोग विनश जाए।।
इस हेतू गुरु पद में, हम वन्दन करते हैं।
श्रीमन्यु मुनीश्वर का, हम अर्चन करते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री श्रीमन्युमहर्षये क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुवर तेरे चरणों में, हम वंदन करते हैं।
श्रीमन्यु मुनीश्वर का, हम अर्चन करते हैं।।टेक.।।
कंचन की थाली में, घृतदीप बना लाए।
गुरुदेव की आरति से, तम मोह विनश जाए।।
इस हेतू गुरु पद में, हम वन्दन करते हैं।
श्रीमन्यु मुनीश्वर का, हम अर्चन करते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री श्रीमन्युमहर्षये मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुवर तेरे चरणों में, हम वंदन करते हैं।
श्रीमन्यु मुनीश्वर का, हम अर्चन करते हैं।।टेक.।।
कर्पूर व चन्दन की, हम धूप बना लाए।
अग्नी में दहन करके, आतम सुख पा जाएँ।।
इस हेतू गुरु पद में, हम वन्दन करते हैं।
श्रीमन्यु मुनीश्वर का, हम अर्चन करते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री श्रीमन्युमहर्षये अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुवर तेरे चरणों में, हम वंदन करते हैं।
श्रीमन्यु मुनीश्वर का, हम अर्चन करते हैं।।टेक.।।
अंगूर आम केला आदिक फल ले आए।
गुरु सम्मुख अर्पण कर, मुक्तीफल को पाएँ।।
इस हेतू गुरु पद में, हम वन्दन करते हैं।
श्रीमन्यु मुनीश्वर का, हम अर्चन करते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री श्रीमन्युमहर्षये मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुवर तेरे चरणों में, हम वंदन करते हैं।
श्रीमन्यु मुनीश्वर का, हम अर्चन करते हैं।।टेक.।।
शाश्वत सुख की इच्छा, से अर्घ्य थाल लाए।
''चन्दनामती'' उसको, अर्पण कर सुख पाएँ।।
इस हेतू गुरु पद में, हम वन्दन करते हैं।
श्रीमन्यु मुनीश्वर का, हम अर्चन करते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री श्रीमन्युमहर्षये अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुपद में झारी से, जलधारा करना है।
आतम शांती के लिए, त्रयधारा करना है।।
इस हेतू गुरु पद में, हम वन्दन करते हैं।
श्रीमन्यु मुनीश्वर का, हम अर्चन करते हैं।।10।।

शांतये शांतिधारा।

नाना विध पुष्पों को, अंजलि में भर लाए।
गुरुपद पुष्पांजलि कर, गुणपुष्प सुरभि पाएं।।
इस हेतू गुरु पद में, हम वन्दन करते हैं।
श्रीमन्यु मुनीश्वर का, हम अर्चन करते हैं।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–दोहा –

सप्तऋषी मण्डल रचा, पूजा हेतु महान।
पुष्पांजलि करके वहाँ, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–शंभु छंद –

अपने पितु के संग दीक्षा ले, श्रीमन्यु पुत्र भी मुनी बने।
निज आत्मा में तन्मय होकर, तप कर ऋद्धी के स्वामि बने।।
उन चारणादि ऋद्धीधारी, मुनिवर की पूजा सुखकारी।
उनकी ऋद्धी से मिल जाती, भौतिक आत्मिक संपति सारी।।2।।

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वित श्री श्रीमन्युमहर्षये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र– **ॐ ह्रीं श्री श्रीमन्युमहर्षये नमः।**

जयमाला

तर्ज –जहाँ डाल-डाल पर.....

श्रीमन्यु मुनीश्वर के सम्मुख पूर्णार्घ्य सजाकर लाए,
भक्ती से अर्घ्य चढ़ाएं।।टेक.।।
जिन आगम हैं पाँच प्रमुख, परमेष्ठि नाम से माने।
इनमें अरिहंत सिद्ध परमात्मा, नाम से जाते जाने।। नाम से.....
आचार्य उपाध्याय साधु कर्म को, नाश परम पद पाएं,
भक्ती से अर्घ्य चढ़ाएं।।1।।

मुनिराज साधु परमेष्ठी जब, घोरातिघोर तप करते।
ऋद्धियाँ प्राप्त होतीं उनको, फिर क्रम से शिवपद वरते।। फिर क्रम से....
हम उनकी पूजा अर्चा करके, भौतिक सुख पा जाएँ,
भक्ती से अर्घ्य चढ़ाएँ।।2।।

इन ऋद्धिधारियों के क्रम में, सप्तर्षि प्रसिद्ध हुए हैं।
राजा श्रीनन्दन और धारिणी माँ के पुत्र हुए हैं।। माँ के.....
सातों भाई दीक्षा लेकर आतम में ध्यान लगाएँ,
भक्ती से अर्घ्य चढ़ाएँ।।3।।

इन सातों में से दुतिय पुत्र, श्रीमन्यु मुनी कहलाए।
जो मथुरा नगरी में भ्राता, मुनियों के संग में आए।।मुनियों के...
''चन्दनामती'' उन सब मुनियों के पद में शीश झुकाएँ,
भक्ती से अर्घ्य चढ़ाएँ।।4।।

उन श्रीमुनिवर की पूजा में जयमाल का थाल सजा है।
पूर्णार्घ्य समर्पित कर गुरुवर! मन में यह भाव जगा है।। मन में....
रत्नत्रय प्राप्ती हेतु भावना वृद्धिंगत कर पाएँ,
भक्ती से अर्घ्य चढ़ाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री श्रीमन्युमहर्षये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–दोहा –

सप्तऋषी की अर्चना, देवे सौख्य महान।
इनके पद की वंदना, करे कष्ट की हान।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

(पूजा नं. 4)

श्रीनिचय महर्षि पूजा

–स्थापना-

सप्तऋषी में तीसरे, हैं श्रीनिचय ऋषीश।
उनकी पूजन हेतु मैं, नमूँ नमाकर शीश।।1।।
आह्वानन स्थापना, सन्निधिकरण महान।
करके मन में भावना, है हो मम कल्याण।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीनिचयमहर्षे! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीनिचयमहर्षे! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीनिचयमहर्षे! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

–अष्टक (स्रग्विणी छंद) –

स्वर्णझारी में गंगा नदी नीर ले, गुरु के पद धार दें जन्ममृत्यू टले।
श्रीनिचय जी मुनी की करूँ अर्चना, उनके चरणों में शत शत मेरी वंदना।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीनिचयमहर्षये जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभि चंदन को गुरुपद में चर्चन करूँ, होवे भवताप विध्वंस शिवपद वरूँ।
श्रीनिचय जी मुनी की करूँ अर्चना, उनके चरणों में शत शत मेरी वंदना।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीनिचयमहर्षये संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ्र अक्षत अखंडित लिया पुंज है, गुरुचरण में चढ़ा पाऊँ गुणकुंज मैं।
श्रीनिचय जी मुनी की करूँ अर्चना, उनके चरणों में शत शत मेरी वंदना।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीनिचयमहर्षये अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंद चंपा चमेली लिया पुष्प है, गुरुचरण में समर्पण करूँ पुष्प है।
श्रीनिचय जी मुनी की करूँ अर्चना, उनके चरणों में शत शत मेरी वंदना।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीनिचयमहर्षये कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

थाल मिष्टान्न पकवान्न के लायके, गुरुचरण पूजहूँ मैं निकट आयके।
श्रीनिचय जी मुनी की करूँ अर्चना, उनके चरणों में शत शत मेरी वंदना।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीनिचयमहर्षये क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नदीपक लिया है कनक थाल में, आरती अब उतारूँ झुका भाल मैं।
श्रीनिचय जी मुनी की करूँ अर्चना, उनके चरणों में शत शत मेरी वंदना।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीनिचयमहर्षये मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप मलयागिरी की सुगंधित लिया, अग्नि में दहके आत्मा सुगंधित किया।
श्रीनिचय जी मुनी की करूँ अर्चना, उनके चरणों में शत शत मेरी वंदना।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीनिचयमहर्षये अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम अंगूर बादाम फल ले लिया, मोक्षफल हेतु गुरुपद में अर्पण किया।
श्रीनिचय जी मुनी की करूँ अर्चना, उनके चरणों में शत शत मेरी वंदना।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीनिचयमहर्षये मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों द्रव्यों सहित अर्घ्य ले थाल में, 'चन्दनामति' समर्पित है गुरुपाद में।
श्रीनिचय जी मुनी की करूँ अर्चना, उनके चरणों में शत शत मेरी वंदना।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीनिचयमहर्षये अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिधारा करूँ श्रीगुरू पदकमल, विश्व की शांति हेतू करूँ पद नमन।
श्रीनिचय जी मुनी की करूँ अर्चना, उनके चरणों में शत शत मेरी वंदना।।10।।

शांतये शांतिधारा।

करके पुष्पांजली श्रीगुरू पदकमल, आत्मगुण प्राप्ति हेतू करूँ पद नमन।
श्रीनिचय जी मुनी की करूँ अर्चना, उनके चरणों में शत शत मेरी वंदना।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा – **सप्तऋषी मण्डल रचा, पूजा हेतु महान।**
पुष्पांजलि करके वहाँ, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

शंभु छंद – **श्री निचय मुनी के तन में भी, तप से ऐसी शक्ती आई।**
अपने भ्राताओं के संग उनने, भी चारणऋद्धी पाई।।
उन चारणादि ऋद्धीधारी, मुनिवर की पूजा सुखकारी।
उनकी ऋद्धी से मिल जाती, भौतिक आत्मिक संपति सारी।।2।।

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वितश्रीनिचयमहर्षये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र – **ॐ ह्रीं श्री श्रीनिचयमहर्षये नमः।**

जयमाला

तर्ज –तन डोले.....

श्रीनिचय मुनीश्वर, के चरणों में, वन्दन शत शत बार है,
पूर्णार्घ्य थाल यह अर्पित है।।टेक.।।

प्रभापुरी नगरी में राजा श्रीनंदन रहते थे।
उनकी रानी ने क्रम क्रम से सात पुत्र जन्मे थे।।उन्होंने सात पुत्र.....
उनमें से ही, श्रीनिचय नाम के, पुत्र तृतिय मुनिराज हैं,
पूर्णार्घ्य थाल यह अर्पित है।।1।।

एक बार प्रीतिंकर मुनि को केवलज्ञान हुआ था।
धनद ने उनकी गंधकुटी का, झट निर्माण किया था।। गुरूजी झट निर्माण....
उनके दर्शन से, सभी भ्रात के, हृदय जगा वैराग्य है,
पूर्णार्घ्य थाल यह अर्पित है।।2।।

सप्तऋषी की सत्य कथा यह, रामायण में लिखी है।
इनके तप की शक्ति सभी को, मथुरापुरि में दिखी है।। गुरूजी मथुरा....
शत्रुघ्नराज ने, गुरु चरणों में, नमन किया शत बार है,
पूर्णार्घ्य थाल यह अर्पित है।।3।।

उन मुनिवर श्रीनिचय के पद में, अर्घ्य सजाकर लाये।
यही 'चन्दनामती' भाव हैं, रत्नत्रय मिल जाये।। गुरुजी रत्नत्रय.....
उग्रोग्र तपस्या, जीवन में, कर सकूँ यही बस सार है,
पूर्णार्घ्य थाल यह अर्पित है।।4।।

ॐ ह्रीं श्री श्रीनिचयमहर्षये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–दोहा –

सप्तऋषी की अर्चना, देवे सौख्य महान।
इनके पद की वंदना, करे कष्ट की हान।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

(पूजा नं. 5)

श्रीसर्वसुन्दर महर्षि पूजा

–स्थापना-(अडिल्ल छंद) –

रामचन्द्र के समय सप्तऋषि थे हुए।
जिनके तप से जन जन मन पावन हुए।।
उनमें चौथे ऋषी सर्वसुन्दर कहे।
उनकी पूजा हेतू आह्वानन करें।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसर्वसुन्दरमहर्षे! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीसर्वसुन्दरमहर्षे! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीसर्वसुन्दरमहर्षे! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

–अष्टक (दोहा) –

सुरसरिता जल से करूँ, गुरुपद में जलधार।
ऋषी सर्वसुन्दर करो, मेरा भी उद्धार।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसर्वसुन्दरमहर्षये जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चन्दन से करूँ, गुरुपूजन सुखकार।
ऋषी सर्वसुन्दर करो, मेरा भी उद्धार।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीसर्वसुन्दरमहर्षये संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत पुंजों से करूँ, गुरुपूजन सुखकार।
ऋषी सर्वसुन्दर करो, मेरा भी उद्धार।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसर्वसुन्दरमहर्षये अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पमाल लेकर करूँ, गुरुपूजन सुखकार।
ऋषी सर्वसुन्दर करो, मेरा भी उद्धार।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीसर्वसुन्दरमहर्षये कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंजन सरस बनाय के, अर्पूं गुरुपद सार।
ऋषी सर्वसुन्दर करो, मेरा भी उद्धार।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीसर्वसुन्दरमहर्षये क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कंचन दीपक से करूँ, गुरु आरति सुखकार।
ऋषी सर्वसुन्दर करो, मेरा भी उद्धार।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीसर्वसुन्दरमहर्षये मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप दहन करके करूँ, गुरुपूजन सुखकार।
ऋषी सर्वसुन्दर करो, मेरा भी उद्धार।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसर्वसुन्दरमहर्षये अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना विध फल से करूँ, गुरुपूजन सुखकार।
ऋषी सर्वसुन्दर करो, मेरा भी उद्धार।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीसर्वसुन्दरमहर्षये मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य 'चन्दनामति' लिया, गुरुपूजन हित आज।
ऋषी सर्वसुन्दर करो, मेरा भी उद्धार।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीसर्वसुन्दरमहर्षये अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतीधारा मैं करूँ, गुरुपद में सुखकार।
ऋषी सर्वसुन्दर करो, मेरा भी उद्धार।।10।।

शांतये शांतिधारा।

पुष्पांजलि को मैं करूँ, गुरुपद में सुखकार।
ऋषी सर्वसुन्दर करो, मेरा भी उद्धार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा – **सप्तऋषी मण्डल रचा, पूजा हेतु महान।**
पुष्पांजलि करके वहाँ, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

शंभु छंद –**तन से सुन्दर मन से सुन्दर था, रूप सर्वसुन्दर ऋषि का।**
इसलिए दूर कर सके घोर-उपसर्ग वे मथुरा नगरी का।।
उन चारणादि ऋद्धीधारी, मुनिवर की पूजा सुखकारी।
उनकी ऋद्धी से मिल जाती, भौतिक आत्मिक संपति सारी।।2।।

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वितश्रीसर्वसुन्दरमहर्षये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र – **ॐ ह्रीं श्रीसर्वसुन्दरमहर्षये नमः।**

जयमाला

तर्ज –जरा सामने तो.....

सप्त ऋषियों की करूँ मैं अर्चना, उनके पद की करूँ मैं वंदना।
सर्वसुन्दर उन्हीं में चतुर्थ हैं, उनकी जयमाल पढ़ करूँ वंदना।।टेक.।।

देव शास्त्र गुरु हैं इस जग में, तीन रतन माने जाते।
इनके आराधन से जग में, तीन रतन पाए जाते।।
तीनों रत्नों की करूँ अभ्यर्थना, सप्तऋषियों की करूँ मैं अर्चना।
सर्वसुन्दर उन्हीं में चतुर्थ हैं, उनकी जयमाल पढ़ करूँ वंदना।।1।।

बृहस्पति गुरु भी श्रीगुरु की, महिमा नहिं कह सकते हैं।
जिनवर की महिमा हम गुरुओं, के द्वारा ही सुनते हैं।।
उन्हीं गुरुओं की करूँ अभ्यर्थना, सप्तऋषियों की करूँ मैं अर्चना।
सर्वसुन्दर उन्हीं में चतुर्थ हैं, उनकी जयमाल पढ़ करूँ वंदना।।2।।

तप करके उन सब ऋषियों ने, ऋद्धि अनेकों पाई थीं।
उनमें से चारण ऋद्धी की, महिमा प्रमुख दिखाई थी।।
उस ऋद्धि की करूँ अभ्यर्थना, सप्त ऋषियों की करूँ मैं अर्चना।
सर्वसुन्दर उन्हीं में चतुर्थ हैं, उनकी जयमाल पढ़ करूँ वंदना।।3।।

उनकी पूजन करके अब, पूर्णार्घ्य चढ़ाने आए हैं।
पद अनर्घ्य ''चन्दनामती'' पाने के लिए हम आए हैं।।
उसी पद की करूँ अभ्यर्थना, सप्तऋषियों की करूँ मैं अर्चना।
सर्वसुन्दर उन्हीं में चतुर्थ हैं, उनकी जयमाल पढ़ करूँ वंदना।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीसर्वसुन्दरमहर्षये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–दोहा –

सप्तऋषी की अर्चना, देवे सौख्य महान।
इनके पद की वंदना, करे कष्ट की हान।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

(पूजा नं. 6)

श्री जयवान् महर्षि पूजा

–स्थापना-(अडिल्ल छंद) –

श्री जयवान् ऋषी की जय जय कीजिए।
अष्ट द्रव्य से उनकी पूजन कीजिए।।
पूजन से पहले स्थापन कीजिए।
निज मन में उनका आह्वानन कीजिए।।

ॐ ह्रीं श्रीजयवान्महर्षे! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीजयवान्महर्षे! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीजयवान्महर्षे! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

–अष्टक (अडिल्ल छंद) –

स्वर्णकलश में प्रासुक नीर भरा लिया।
जन्म मृत्यु क्षय हित गुरुपद धारा किया।।
सप्तऋषी में पंचम ऋषि जयवान् हैं।
उनकी पूजन दे उत्तम वरदान है।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीजयवान्महर्षये जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन घिस कर स्वर्ण कटोरी में लिया।
भव आतप नाशन हित गुरुपद चर्चिया।।
सप्तऋषी में पंचम ऋषि जयवान् हैं।
उनकी पूजन दे उत्तम वरदान है।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीजयवान्महर्षये संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णथाल में अक्षत धोकर ले लिया।
अक्षय पद हित गुरुपद पुंज चढ़ा दिया।।
सप्तऋषी में पंचम ऋषि जयवान् हैं।
उनकी पूजन दे उत्तम वरदान है।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीजयवान्महर्षये अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णपात्र में विविध पुष्प चुन कर लिया।
कामबाण नाशन हित, गुरुपद अर्पिया।।
सप्तऋषी में पंचम ऋषि जयवान् हैं।
उनकी पूजन दे उत्तम वरदान है।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीजयवान्महर्षये कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम व्यंजन स्वर्ण थाल में भर लिया।
क्षुधा नाश हित गुरुपद में अर्पण किया।।
सप्तऋषी में पंचम ऋषि जयवान् हैं।
उनकी पूजन दे उत्तम वरदान है।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीजयवान्महर्षये क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णपात्र में घृत का दीप जला लिया।
मोह नाश हित गुरुवर की आरति किया।।
सप्तऋषी में पंचम ऋषि जयवान् हैं।
उनकी पूजन दे उत्तम वरदान है।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीजयवान्महर्षये मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप सुगंधित गुरुपूजन हित ले लिया।
अग्नी में कर दहन कर्म नाशन किया।।
सप्तऋषी में पंचम ऋषि जयवान् हैं।
उनकी पूजन दे उत्तम वरदान है।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीजयवान्महर्षये अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णपात्र में उत्तम-उत्तम फल लिया।
शिवपद हेतू गुरुपद में अर्पण किया।।
सप्तऋषी में पंचम ऋषि जयवान् हैं।
उनकी पूजन दे उत्तम वरदान है।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीजयवान्महर्षये मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णथाल में अर्घ्य ''चन्दनामति'' लिया।
पद अनर्घ्य हित गुरुपद में अर्पित किया।।

सप्तऋषी में पंचम ऋषि जयवान् हैं।
उनकी पूजन दे उत्तम वरदान है।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीजयवान्महर्षये अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कंचन झारी में प्रासुक जल ले लिया।
विश्वशांति हित गुरुपद में धारा किया।।
सप्तऋषी में पंचम ऋषि जयवान् हैं।
उनकी पूजन दे उत्तम वरदान है।।10।।

शांतये शांतिधारा।

हस्तअंजुली में पुष्पों को भर लिया।
पुष्पांजलि कर मन में गुरुगुण भर लिया।।
सप्तऋषी में पंचम ऋषि जयवान् हैं।
उनकी पूजन दे उत्तम वरदान है।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–दोहा –

सप्तऋषी मण्डल रचा, पूजा हेतु महान।
पुष्पांजलि करके वहाँ, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–शंभु छंद –

शत्रुघ्न ने मथुरा के राजा, मधुसुन्दर को जब मार दिया।
तब देव विक्रिया को जयवान्, सहित सब ऋषि ने शांत किया।।
उन चारणादि ऋद्धीधारी, मुनिवर की पूजा सुखकारी।
उनकी ऋद्धी से मिल जाती, भौतिक आत्मिक संपति सारी।।2।।

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वितश्रीजयवानमहर्षये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र – **ॐ ह्रीं श्रीजयवान्महर्षये नमः।**

जयमाला

तर्ज –बजे कुण्डलपुर में बधाई.....

नाम जप ले तू गुरुनाम जप ले-2, काम सारे बन जाएंगे, नाम जप ले।।टेक.।।

सात ऋषियों का नाम सुना है।
उनके तप का भी नाम सुना है।।
इन्हीं के सब गुण गाएंगे, नाम जप ले।।1।।

इन ऋषियों में पंचम ऋषि थे।
श्रीजयवान् जी महर्षि थे।।
इन्हीं के सब गुण गाएंगे, नाम जप ले।।2।।

ये ऋद्धियों के थे स्वामी।
सब सिद्धियों के थे स्वामी।।
इन्हीं के सब गुण गाएंगे, नाम जप ले।।3।।

इनके चरणों में शीश झुकाओ।
इनकी पूजा का थाल सजाओ।।
इन्हीं के सब गुण गाएंगे, नाम जप ले।।4।।

इनकी जयमाल मिलकर गाओ।
''चन्दनामति'' अर्घ्य चढ़ाओ।।
इन्हीं के सब गुण गाएंगे, नाम जप ले।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीजयवान्महर्षये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–दोहा –

सप्तऋषी की अर्चना, देवे सौख्य महान।
इनके पद की वंदना, करे कष्ट की हान।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

(पूजा नं. 7)

श्री विनयलालस महर्षि पूजा

–स्थापना –

तर्ज-परदेशी-परदेशी.....

ऋषिवर जी, मुनिवर जी, करते हैं हम-2, पूजन तेरी-हाँ पूजन तेरी।
पूजा करके हे गुरुवर, भक्ति करें हम, भक्ती से होगा मेरे कर्मों का शमन।।
ऋषिवर जी..।।टेक.।।

जिनशास्त्रों में सप्तऋषी का नाम है.....नाम है।
जिनके पद में करते सभी प्रणाम हैं।।-2
उनमें छठे मुनिवर, नाम विनयलालस
करें हम उन्हीं का, आज मिल करके अर्चन।।

ऋषिवर जी, मुनिवर जी, करते हैं हम-2, पूजन तेरी-हाँ पूजन तेरी।।1।।

आह्वानन स्थापन करके वन्दना.....वंदना।
पुनः अष्ट द्रव्यों से कर लें अर्चना।।-2
यही विधि करके, मन में उन्हें धरके,
करें हम गुरू का, आज मिल करके अर्चन।।

ऋषिवर जी, मुनिवर जी, करते हैं हम-2, पूजन तेरी-हाँ पूजन तेरी।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीविनयलालसमहर्षे! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीविनयलालसमहर्षे! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीविनयलालसमहर्षे! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

–अष्टक –

ऋषिवर जी, मुनिवर जी, करते हैं हम-2, पूजन तेरी-हाँ पूजन तेरी।
पूजा करके हे गुरुवर, भक्ति करें हम, भक्ती से होगा मेरे कर्मों का शमन।।
ऋषिवर जी..।।टेक.।।

शीतल प्रासुक जल ले, जलधारा करूँ.....धारा करूँ।
जन्म मृत्यु नश जाय, यही आशा करूँ।।-2

गुरू विनयलालस, देवें मुझे साहस, ऋद्धियों के धारक, उनके चरणों में नमन।।
ऋषिवर जी...।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीविनयलालसमहर्षये जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर जी, मुनिवर जी, करते हैं हम-2, पूजन तेरी-हाँ पूजन तेरी।
पूजा करके हे गुरुवर, भक्ति करें हम, भक्ती से होगा मेरे कर्मों का शमन।।
ऋषिवर जी..।।टेक.।।

चंदन घिसकर गुरुपद में चर्चन करूँ.....चर्चन करूँ।
भव आतप नाशन हेतू, अर्चन करूँ।।-2

गुरू विनयलालस, देवें मुझे साहस, ऋद्धियों के धारक, उनके चरणों में नमन।।
ऋषिवर जी...।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीविनयलालसमहर्षये संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर जी, मुनिवर जी, करते हैं हम-2, पूजन तेरी-हाँ पूजन तेरी।
पूजा करके हे गुरुवर, भक्ति करें हम, भक्ती से होगा मेरे कर्मों का शमन।।
ऋषिवर जी..।।टेक.।।

मोती सम अक्षत से, गुरुपद पूजहूँ....पूजहूँ।
शाश्वत अक्षय पद हेतु, गुरु को नमूँ।।-2

गुरू विनयलालस, देवें मुझे साहस, ऋद्धियों के धारक, उनके चरणों में नमन।।
ऋषिवर जी...।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीविनयलालसमहर्षये अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर जी, मुनिवर जी, करते हैं हम-2, पूजन तेरी-हाँ पूजन तेरी।
पूजा करके हे गुरुवर, भक्ति करें हम, भक्ती से होगा मेरे कर्मों का शमन।।
ऋषिवर जी..।।टेक.।।

श्वेत सुगंधित पुष्पमाल गुरुपद धरूँ.....पद धरूँ।
काम बाण हो नाश, यही आशा करूँ।।-2

गुरू विनयलालस, देवें मुझे साहस, ऋद्धियों के धारक, उनके चरणों में नमन।।
ऋषिवर जी...।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीविनयलालसमहर्षये कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर जी, मुनिवर जी, करते हैं हम-2, पूजन तेरी-हाँ पूजन तेरी।
पूजा करके हे गुरुवर, भक्ति करें हम, भक्ती से होगा मेरे कर्मों का शमन।।
ऋषिवर जी..।।टेक.।।

पकवानों का थाल गुरू के पद धरूँ.....पद धरूँ।
क्षुधारोग नश जाय, यही आशा करूँ।।-2
गुरू विनयलालस, देवें मुझे साहस, ऋद्धियों के धारक, उनके चरणों में नमन।।
ऋषिवर जी...।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीविनयलालसमहर्षये क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर जी, मुनिवर जी, करते हैं हम-2, पूजन तेरी-हाँ पूजन तेरी।
पूजा करके हे गुरुवर, भक्ति करें हम, भक्ती से होगा मेरे कर्मों का शमन।।
ऋषिवर जी..।।टेक.।।

घृत का दीप जलाय, गुरू आरति करूँ....आरति करूँ।
मोहतिमिर नश जाय, यही आशा करूँ।।-2
गुरू विनयलालस, देवें मुझे साहस, ऋद्धियों के धारक, उनके चरणों में नमन।।
ऋषिवर जी...।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीविनयलालसमहर्षये मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर जी, मुनिवर जी, करते हैं हम-2, पूजन तेरी-हाँ पूजन तेरी।
पूजा करके हे गुरुवर, भक्ति करें हम, भक्ती से होगा मेरे कर्मों का शमन।।
ऋषिवर जी..।।टेक.।।

ताजी धूप बनाय, अग्नि में है दहन.....है दहन।
गुरुपूजन से होता, कर्मों का हवन।।-2
गुरू विनयलालस, देवें मुझे साहस, ऋद्धियों के धारक, उनके चरणों में नमन।।
ऋषिवर जी...।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीविनयलालसमहर्षये अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर जी, मुनिवर जी, करते हैं हम-2, पूजन तेरी-हाँ पूजन तेरी।
पूजा करके हे गुरुवर, भक्ति करें हम, भक्ती से होगा मेरे कर्मों का शमन।।
ऋषिवर जी..।।टेक.।।

फल का थाल गुरू चरणों में अर्पण है.....अर्पण है।
मोक्ष महाफल प्राप्ती हेतु समर्पण है।।-2
गुरू विनयलालस, देवें मुझे साहस, ऋद्धियों के धारक, उनके चरणों में नमन।।
ऋषिवर जी...।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीविनयलालसमहर्षये मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर जी, मुनिवर जी, करते हैं हम-2, पूजन तेरी-हाँ पूजन तेरी।
पूजा करके हे गुरुवर, भक्ति करें हम, भक्ती से होगा मेरे कर्मों का शमन।।
ऋषिवर जी..।।टेक.।।

अर्घ्य थाल गुरुपद में करना अर्पण है.....अर्पण है।
करूँ ''चन्दनामति'' गुरुपद में वंदन मैं।।-2
गुरू विनयलालस, देवें मुझे साहस, ऋद्धियों के धारक, उनके चरणों में नमन।।
ऋषिवर जी...।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीविनयलालसमहर्षये अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा –

शांतीधारा के लिए, जलयुत कलश मंगाय।
राज्य राष्ट्र नृप के लिए, है यह मंगल भाव।।10।।

शांतये शांतिधारा।

विश्व एकता के लिए, पुष्पांजलि का भाव।
मैत्री फैले जगत में, आपस में सौहार्द।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–दोहा –

सप्तऋषी मण्डल रचा, पूजा हेतु महान।
पुष्पांजलि करके वहाँ, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–शंभु छंद –

अत्यन्त विनयवृत्ती वाले, मुनिराज विनयलालस जी थे।
अपने पितु मुनिवर श्रीनंदन के, साथ तपस्या में रत थे।।
उन चारणादि ऋद्धीधारी, मुनिवर की पूजा सुखकारी।
उनकी ऋद्धी से मिल जाती, भौतिक आत्मिक संपति सारी।।2।।

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वितश्रीविनयलालसमहर्षये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र – **ॐ ह्रीं श्रीविनयलालसमहर्षये नमः।**

जयमाला

–शंभु छंद –

गुरुवर! ऋषिवर! यतिवर! मुनिवर! तुम शिवपथ के दिग्दर्शक हो।
संसार में भी रह करके तुम संसार के प्रति अनुरक्त न हो।।
तुम राजाओं के भी राजा महाराज तभी कहलाते हो।
तुम शिवपथ के अनुगामी बन सबको शिवपथ बतलाते हो।।1।।

ऋषियों में शिरोमणि सप्तऋषी जो आगम में बतलाए हैं।
उनमें हि विनयलालस ऋषि को हम अर्घ्य चढ़ाने आए हैं।।
मथुरा नगरी में इन सबने इक साथ प्रभाव दिखाया था।
देवों की शक्ति पराजित कर सब रोग को दूर भगाया था।।2।।

शत्रुघ्न को चिंतित देख मुनीश्वर ने उनको उपदेश दिया।
हे राजन्! कुछ दिन में कलियुग आएगा यह संदेश दिया।।
उस कलियुग में यह जिनशासन कुछ कम महिमा दिखलाएगा।
अज्ञानी क्रूर प्राणियों से मिथ्यात्वतिमिर छा जाएगा।।3।।

सच्चे गुरुओं के दर्शन तब दुर्लभता से मिल पाएंगे।
यदि मिल जावें तो मूढात्मन मूल्यांकन नहिं कर पाएंगे।।
मुनि बोले, हे शत्रुघ्न! आज तुम हितकारी इक नियम करो।
आहारदान सच्चे गुरुओं को देने का संकल्प करो।।4।।

इस दान को देने से गृहस्थ जीवन सच्चा सार्थक होगा।
मथुरा नगरी के नर-नारी का जीवन मंगलमय होगा।
शत्रुघ्न ने इस गुरुआज्ञा का पालन करके दिखलाया था।
जिनमंदिर कई बनाकर उनमें सप्तऋषी पधराया था।।5।।

उपकार सप्तऋषियों का उनके मन में बहुत समाया था।
श्रावक कर्तव्यों का पालन करना गुरु ने सिखलाया था।।
इस कलियुग में उनकी भविष्यवाणी बिल्कुल सच दिखती है।
जिनवर वाणी में पूर्ण रुची विरले लोगों की दिखती है।।6।।

मुनिराज विनयलालस के संग सातों ऋषियों को नमन करूँ।
पूर्णार्घ्य चढ़ा ''चन्दनामती'' गुरुचरण सदा स्मरण करूँ।।
मेरे भव भव के पाप कटें गुरुपूजन का फल यही मिले।
सम्यक् तप करके मोक्ष लहूँ ऐसी अन्तर में ज्योति जले।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीविनयलालसमहर्षये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–दोहा –

सप्तऋषी की अर्चना, देवे सौख्य महान।
इनके पद की वंदना, करे कष्ट की हान।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

(पूजा नं. 8)

श्री जयमित्र महर्षि पूजा

तर्ज –झुमका गिरा रे.....

पूजन करो जी,

जयमित्र ऋषी के तप व त्याग की पूजन करो जी।।टेक.।।
तप करके जिनने अपनी काया कुन्दन सम कर ली थी।
नाना ऋद्धि समन्वित होकर आतम सिद्धी वर ली थी।।
अपने सभी भाइयों के संग गगन गमन वे करते थे।
वर्षायोग के बीच में भी वे विचरण कभी भी करते थे,
विचरण कभी भी करते थे।।

पूजन करो जी,

जयमित्र ऋषी के तप व त्याग की पूजन करो जी।।1।।

ॐ ह्रीं श्री जयमित्रमहर्षे! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री जयमित्रमहर्षे! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री जयमित्रमहर्षे! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

–अष्टक–

तर्ज –ए री छोरी बांगड़ वाली.....

आओ सब मिल पूजन कर लें, श्री जयमित्र मुनीश्वर की-2।।टेक.।।
जन्म मृत्यु के नाशन हेतू, गुरूपद का प्रक्षालन है।
शीतल जल से पूजन कर लें, श्रीजयमित्र मुनीश्वर की।।आओ.।।1।।

ॐ ह्रीं श्री जयमित्रमहर्षये जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

आओ सब मिल पूजन कर लें, श्री जयमित्र मुनीश्वर की-2।।टेक.।।
भव आतप विध्वंसन हेतू, गुरुपद चंदन चर्चन है।
चंदन लेकर पूजन कर लें, श्री जयमित्र मुनीश्वर की।।आओ.।।2।।

ॐ ह्रीं श्री जयमित्रमहर्षये संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

आओ सब मिल पूजन कर लें, श्री जयमित्र मुनीश्वर की-2।।टेक.।।
अक्षयपद की प्राप्ती हेतू, अक्षत पुंज समर्पित हैं।
तंदुल लेकर पूजन कर लें, श्री जयमित्र मुनीश्वर की।।आओ.।।3।।

ॐ ह्रीं श्री जयमित्रमहर्षये अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

आओ सब मिल पूजन कर लें, श्री जयमित्र मुनीश्वर की-2।।टेक.।।
कामबाण विध्वंसन हेतू, पुष्पमाल गुरुपद धरना।
विविध पुष्प से पूजन कर लें, श्री जयमित्र मुनीश्वर की।।आओ.।।4।।

ॐ ह्रीं श्री जयमित्रमहर्षये कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

आओ सब मिल पूजन कर लें, श्री जयमित्र मुनीश्वर की-2।।टेक.।।
क्षुधारोग विध्वंसन हेतू, पकवानों का थाल भरा।
नैवेद्यों से पूजन कर लें, श्री जयमित्र मुनीश्वर की।।आओ.।।5।।

ॐ ह्रीं श्री जयमित्रमहर्षये क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आओ सब मिल पूजन कर लें, श्री जयमित्र मुनीश्वर की-2।।टेक.।।
मोहतिमिर विध्वंसन हेतू, गुरुवर की आरति कर लें।
दीप जलाकर पूजन कर लें, श्री जयमित्र मुनीश्वर की।।आओ.।।6।।

ॐ ह्रीं श्री जयमित्रमहर्षये मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आओ सब मिल पूजन कर लें, श्री जयमित्र मुनीश्वर की-2।।टेक.।।
अष्टकर्म विध्वंसन हेतू, ताजी धूप चढ़ाना है।
धूप जलाकर पूजन कर लें, श्री जयमित्र मुनीश्वर की।।आओ.।।7।।

ॐ ह्रीं श्री जयमित्रमहर्षये अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आओ सब मिल पूजन कर लें, श्री जयमित्र मुनीश्वर की-2।।टेक.।।
मोक्ष महाफल प्राप्ती हेतू, गुरुपद में फल थाल धरा।
विविध फलों से पूजन कर लें, श्री जयमित्र मुनीश्वर की।।आओ.।।8।।

ॐ ह्रीं श्री जयमित्रमहर्षये मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आओ सब मिल पूजन कर लें, श्री जयमित्र मुनीश्वर की-2।।टेक.।।
पद अनर्घ्य की प्राप्ति ''चन्दनामती'' हमें अब करना है।
अर्घ्य थाल ले पूजन कर लें, श्री जयमित्र मुनीश्वर की।।आओ.।।9।।

ॐ ह्रीं श्री जयमित्रमहर्षये अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आओ सब मिल पूजन कर लें, श्री जयमित्र मुनीश्वर की-2।।टेक.।।
आत्मशांति अरु विश्वशांति के, लिए प्रार्थना करना है।
शांतिधार कर पूजन कर लें, श्रीजयमित्र मुनीश्वर की।।आओ.।।10।।

शांतये शांतिधारा।

आओ सब मिल पूजन कर लें, श्री जयमित्र मुनीश्वर की-2।।टेक.।।
गुण पुष्पों की प्राप्ति हेतु, गुरुवर से प्रार्थना करना है।
पुष्पांजलि कर पूजन कर लें, श्री जयमित्र मुनीश्वर की।।आओ.।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–दोहा –

सप्तऋषी मण्डल रचा, पूजा हेतु महान।
पुष्पांजलि करके वहाँ, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–शंभु छंद –

अंतिम थे श्रीजयमित्र महर्षी, मित्रभावना से संयुत।
उग्रोग्र तपस्या करने से, हो गये सर्वऋद्धीसंयुत।।
उन सर्वौषधि आदिक ऋद्धीयुत, मुनि की पूजा सुखकारी।
उनकी ऋद्धी से मिल जाती, भौतिक आत्मिक संपति सारी।।2।।

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वितश्रीजयमित्रमहर्षये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–

श्रीसुरमन्यू श्रीमन्यू अरु, श्रीनिचय सर्वसुन्दर मुनिवर।
जयवान विनयलालस एवं, जयमित्र ऋद्धिसंयुत ऋषिवर।।

ये सातों भाई सप्तऋषी, कहलाए हैं जिनशासन में।
इनके चरणों में अर्घ्य चढ़ाकर, पा जाऊँ शिवसाधन मैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री सुरमन्यु-श्रीमन्यु-श्रीनिचय-सर्वसुन्दर-जयवान-विनयलालस-जयमित्र नाम सप्तर्षिभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–

मथुरा नगरी की पावन भू को, अर्घ्य चढ़ाने आये हैं।
चारणऋद्धीयुत सप्तऋषी को, शीश झुकाने आए हैं।।टेक.।।

राजा मधुसुन्दर मथुरा में, सुखपूर्वक राज्य चलाते थे।
वे लंकापति रावण के, जामाता प्रसिद्ध कहलाते थे।।
रामायण जैन के सत्य कथानक को बतलाने आए हैं।
चारणऋद्धीयुत सप्तऋषी को, शीश झुकाने आए हैं।।1।।

अपने भाई शत्रुघ्न से इक दिन, रामचन्द्र ने पूछ लिया।
किस नगरी का तुम राज्य, चाहते हो बोलो मेरे भैय्या।।
मथुरा नगरी का राज्य सुनो, शत्रुघ्न माँग हर्षाए हैं।
चारणऋद्धीयुत सप्तऋषी को, शीश झुकाने आए हैं।।2।।

समझाया राम व लक्ष्मण ने, हे भ्रात! वहाँ तुम मत जाओ।
हम सबके शत्रू मधुसुन्दर, राजा को तुम मत भड़काओ।।
फिर भी शत्रुघ्न जबर्दस्ती, मथुरा नगरी में आए हैं।
चारणऋद्धीयुत सप्तऋषी को, शीश झुकाने आए हैं।।3।।

सेना सह कर आक्रमण उन्होंने, मधुसुन्दर को घेर लिया।
मधुसुन्दर ने रणभूमि में ही, वैराग्य भाव को धार लिया।।
यह दृश्य देख देवों ने नभ से, पुष्प रतन बरसाए हैं।
चारणऋद्धीयुत सप्तऋषी को, शीश झुकाने आए हैं।।4।।

मधुसुन्दर नृप का शूलरत्न, शत्रुघ्न नृपति ने प्राप्त किया।
चमरेन्द्र ने क्रोधित हो मथुरा को, महामारियुत बना दिया।।

ऐसे संकट में सप्तऋषी, मथुरानगरी में आए हैं।
चारणऋद्धीयुत सप्तऋषी को, शीश झुकाने आए हैं।।5।।

उनकी सर्वौषधि ऋद्धी से, मथुरा का संकट भाग गया।
मथुरा की सारी जनता ने, गुरु का प्रभाव स्वीकार किया।।
गुरुआज्ञा से शत्रुघ्न वहाँ, जिनमंदिर खूब बनाए हैं।
चारणऋद्धीयुत सप्तऋषी को, शीश झुकाने आए हैं।।6।।

इस घटना के पश्चात् वहाँ, जम्बूस्वामी को मोक्ष हुआ।
''चन्दनामती'' मथुरा चौरासी, नाम से तीर्थ प्रसिद्ध हुआ।।
उस पावन तीर्थ धरा को हम, पूर्णार्घ्य चढ़ाने आए हैं।
चारणऋद्धीयुत सप्तऋषी को, शीश झुकाने आए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं महामारीरोगनिवारणस्थलमथुरापुर तीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र–**ॐ ह्रीं श्री जयमित्रमहर्षये नमः।**

जयमाला

तर्ज –चांदनपुर के गाँव में.....

अष्ट दरब का थाल ले, पूर्णार्घ्य समर्पण है-श्री जयमित्र ऋषी के पद में।
जयमित्र ऋषी के पद में, सातों ऋषियों के सुमिरन में।।अष्ट दरब.।।टेक.।।

भव भोगों को तजने का, जब भाव हृदय में आता है।
तब संसारी प्राणी गुरु को, अपने भाव बताता है।
शुभ भावों का थाल ले, पूर्णार्घ्य समर्पण है-श्री जयमित्र ऋषी के पद में।।1।।

दीक्षा धारण करके प्राणी, घोर तपस्या करता है।
भव भव में संचित कर्मों का, नाश स्वयं वह करता है।।
उन्हीं तपस्वी के पद में, पूर्णार्घ्य समर्पण है-श्री जयमित्र ऋषी के पद में।।2।।

तप के द्वारा ही मुनियों में, ऋद्धि प्रगट हो जाती हैं।
उनके द्वारा ही कितनों को, शांति प्राप्त हो जाती है।।
ऋद्धि सहित मुनि के पद में, पूर्णार्घ्य समर्पण है-श्री जयमित्र ऋषी के पद में।।3।।

मथुरा नगरी में सातों ऋषि, एक साथ ही आए थे।
नृप शत्रुघ्न सहित मथुरा के, नर नारी हर्षाए थे।।
उन सप्त ऋषि के पद में, पूर्णार्घ्य समर्पण है-श्री जयमित्र ऋषि के पद में।।4।।

उनकी ही ''चन्दनामती'', जयमाल का थाल सजाया है।
ऋद्धि सहित गुरुओं के गुण, गाने का भाव बनाया है।।
स्वर्णिम अर्घ्य बनाय के, पूर्णार्घ्य समर्पण है-श्री जयमित्र ऋषी के पद में।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीजयमित्रमहर्षये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–दोहा –

सप्तऋषी की अर्चना, देवे सौख्य महान।
इनके पद की वंदना, करे कष्ट की हान।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

बड़ी जयमाला

तर्ज –माई रे माई.....

गुरुभक्ती के लिए अर्घ्य का, थाल सजाकर लाए।
सप्तऋषी की पूजाकर, जयमाल बड़ी हम गाएँ।।
जय हो सप्तऋषी की जय, जय हो सप्तऋषी की जय-2।।टेक.।।

राजा दशरथ और राम के, युग की यह घटना है।
सात सगे भ्राताओं के, तप ऋद्धि की यह घटना है।।
इनके तप का अनुमोदन कर, पुण्य कमाने आए।
सप्तऋषी की पूजा कर, जयमाल बड़ी हम गाएँ।।
जय हो सप्तऋषी की जय, जय हो सप्तऋषी की जय-2।।1।।

नगर प्रभापुर में राजा, श्रीनन्दन जी रहते थे।
उनकी रानी ने क्रम क्रम से, सात पुत्र जनमे थे।।
सातों सुत पितु के संग दीक्षा, ले मन में हर्षाए।
सप्तऋषी की पूजा कर, जयमाल बड़ी हम गाएँ।।
जय हो सप्तऋषी की जय, जय हो सप्तऋषी की जय-2।।2।।

पिता ने केवलज्ञान प्राप्त कर, मोक्षधाम को पाया।
इन सातों मुनियों ने तपकर, नव इतिहास बनाया।।
कई ऋद्धियों के स्वामी बन, जग के कष्ट मिटाए।
सप्तऋषी की पूजा कर, जयमाल बड़ी हम गाएँ।।
जय हो सप्तऋषी की जय, जय हो सप्तऋषी की जय-2।।3।।

एक बार मथुरा में इनका, वर्षायोग हुआ था।
रोग महामारी जहाँ फैला, चारों ओर हुआ था।।
जनता के ही पुण्ययोग से, गुरु चौमास रचाएँ।
सप्तऋषी की पूजा कर, जयमाल बड़ी हम गाएँ।।
जय हो सप्तऋषी की जय, जय हो सप्तऋषी की जय-2।।4।।
इनकी ही इक बात सुनो, वे ऋद्धीधारी मुनिवर।

वर्षायोग के मध्य पहुँच गए, नगरि अयोध्या पुरिवर।।
अर्हद्दत्त सेठ तब इनका, विनय नहीं कर पाए।
सप्तऋषी की पूजा कर, जयमाल बड़ी हम गाएँ।।
जय हो सप्तऋषी की जय, जय हो सप्तऋषी की जय-2।।5।।

सेठ ने सोचा ये मुनि, आगमनिष्ठ नहीं लगते हैं।
वर्षायोग में चूँकी स्वैराचार गमन करते हैं।।
इसीलिए आहार हेतु ये, आज मेरे घर आए।
सप्तऋषी की पूजा कर, जयमाल बड़ी हम गाएँ।।
जय हो सप्तऋषी की जय, जय हो सप्तऋषी की जय-2।।6।।

फिर भी सेठ की पुत्रवधू ने, गुरुओं को पड़गाया।
नवधाभक्ती करके उन, सबको आहार कराया।।
कर आहार वे सातों ऋषिवर, जिनमंदिर में आए।
सप्तऋषी की पूजा कर, जयमाल बड़ी हम गाएँ।।
जय हो सप्तऋषी की जय, जय हो सप्तऋषी की जय-2।।7।।

द्युति आचार्य वहाँ पर अपने, संघ सहित स्थित थे।
ऋद्धि सहित मुनियों को लख, वे खड़े हुए भक्ती से।।
गुरु को नमस्कार करते लख, शिष्य बहुत अकुलाए।
सप्तऋषी की पूजा कर, जयमाल बड़ी हम गाएँ।।
जय हो सप्तऋषी की जय, जय हो सप्तऋषी की जय-2।।8।।

सातों ऋषि आकाशमार्ग से, उड़कर चले गए जब।
मुनि शिष्यों ने गुरु अविनय का, प्रायश्चित्त लिया तब।।
अर्हद्दत्त सेठ भी तत्क्षण, जिनमंदिर में आए।
सप्तऋषी की पूजा कर, जयमाल बड़ी हम गाएँ।।
जय हो सप्तऋषी की जय, जय हो सप्तऋषी की जय-2।।9।।

द्युति आचार्य ने कहा सेठ से, बड़े भाग्यशाली हो।
सेठ ने रोकर कहा पूज्यवर, मुझको प्रायश्चित दो।।

कैसे अब उन महामुनीश्वर का दर्शन हम पाएँ।
सप्तऋषी की पूजा कर, जयमाल बड़ी हम गाएँ।।
जय हो सप्तऋषी की जय, जय हो सप्तऋषी की जय-2।।10।।

मथुरा जाकर सप्तऋषी का, वंदन अब करना है।
गुरुवर बोले यही श्रेष्ठिवर! प्रायश्चित करना है।।
तभी सेठ गुरुवंदन करने, मथुरापुरि में आए।
सप्तऋषी की पूजा कर, जयमाल बड़ी हम गाएँ।।
जय हो सप्तऋषी की जय, जय हो सप्तऋषी की जय-2।।11।।

इन्हीं सप्तऋषियों की आज भी, प्रतिमाएँ बनती हैं।
जम्बूद्वीप हस्तिनापुर में, निधियाँ ये मिलती हैं।।
भौतिक संपति हेतु भक्तजन, पूजा इनकी रचाएँ।
सप्तऋषी की पूजा कर, जयमाल बड़ी हम गाएँ।।
जय हो सप्तऋषी की जय, जय हो सप्तऋषी की जय-2।।12।।

गणिनी ज्ञानमती की शिष्या, नाम 'चन्दनामति' है।
पूर्ण अर्घ्य का थाल किया, सप्तर्षि चरण अर्पित है।।
जब तक मुक्ति मिले तब तक, गुरुभक्ति सदा मन भाए।
सप्तऋषी की पूजा कर, जयमाल बड़ी हम गाएँ।।
जय हो सप्तऋषी की जय, जय हो सप्तऋषी की जय-2।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीसुरमन्युश्रीमन्युश्रीनिचयश्रीसर्वसुन्दरश्रीजयवानश्रीविनयलालस-श्रीजयमित्रनाम ऋद्धिधारकसप्तऋषिभ्यो जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

प्रशस्ति

तीर्थंकर श्री शांति-कुंथु-अरनाथ प्रभू को करूँ नमन।
उनकी पावन जन्मभूमि हस्तिनापुरी को शत वन्दन।।
जम्बूद्वीप सुमेरुगिरी के जिनचैत्यालय को वन्दन।
तेरहद्वीप व तीन लोक की सब प्रतिमाओं को वन्दन।।1।।

प्रथमाचार्य शांतिसागर गुरुवर के पद में करूँ नमन।
उनके पट्टाचार्य प्रथम आचार्य वीरसागर को नमन।।
वीरसिंधु की शिष्या गणिनी ज्ञानमती माता को नमन।
बालयोगिनी प्रथम बनीं जो उनके श्रीचरणों में नमन।।2।।

इनसे दीक्षा-शिक्षा पाकर मेरा जीवन हुआ सफल।
नाम ''चन्दनामती'' प्राप्तकर मैंने पावन किया जनम।।
इनकी सन्निधि में मेरा चलता रत्नत्रय आराधन।
गुरु की छत्रच्छाया में निर्विघ्न चले ज्ञानाराधन।।3।।

इस सप्तर्षि विधान की रचना मैंने की गुरुभक्ती से।
ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से पाई शक्ती है।।
जम्बूद्वीप में सप्तऋषी की प्रतिमाएँ खड्गासन हैं।
इसीलिए उनका विधान लिखने को है आया मन में।।4।।

श्री सुभाष[1]चंद श्रावकरत्न ने किया निवेदन भी मुझसे।
सप्तऋषी मण्डल विधान रचिए प्रेरणा मिली उनसे।।
गुरुआज्ञा से इसीलिए सप्तर्षि विधान बनाया है।
उन जैसी तपशक्ति मिले यह भाव हृदय में आया है।।5।।

वीर संवत् पच्चिस सौ छत्तिस श्रावण शुक्ला ग्यारस है।
मुझको दीक्षा लेकर पूरे हुए वर्ष जब इक्किस हैं।।
बाइसवीं इस दीक्षा तिथि में मैंने पूर्ण किया इसको।
जम्बूद्वीप हस्तिनापुर में किया समर्पित श्रीगुरु को।।6।।

1. टिकैतनगर-उ.प्र. निवासी, मेरे गृहस्थावस्था के भ्राता हैं।

मथुरा नगरी की महामारी दूर हुई जिनके तप से।
भाव यही हर मानव होवे स्वस्थ सप्तऋषि पूजन से।।
भारत की धरती पर जब दुर्भिक्ष आदि संकट आवें।
इस पूजन को सभी जगह करके सुभिक्ष मंगल पावें।।7।।

सप्तऋषी प्रतिमा बनवाकर जिनमंदिर में पधराओ।
उनका कर अभिषेक सदा गंधोदक घर में ले आओ।।
नेत्र आदि में उसे लगाकर घर में उसको छिड़काओ।
सप्तऋषी का व्रत भी करके मनवांछित फल पा जाओ।।8।।

इस विधान से यदि कुछ प्राणी स्वस्थ सुखी बन पाएंगे।
तब समझो सम्पूर्ण मनोरथ सफल मेरे हो जाएंगे।।
सप्तऋषी से यही प्रार्थना है अनुकम्पा बनी रहे।
विश्व धरा पर सुख शांती के साथ समृद्धी बनी रहे।।9।।

आरती सप्तऋषि की

मैं तो आरति उतारूँ रे, सप्त ऋषीश्वर की।
जय-जय-जय सप्तऋषि, जय जय जय।।टेक.।।

पहले मुनिवर हैं सुरमन्यु, चारण ऋद्धीधर.....चारणऋद्धीधर।
दूजे ऋषिवर हैं श्रीमन्यु, जन जन के हितकर.....जन जन के।
इनको नमस्कार करूँ, इनका सत्कार करूँ, इनको निहारूँ रे,
हो प्यारा-प्यारा मुखड़ा निहारूँ रे.....मैं तो.....।।1।।

श्रीनिचय मुनीश्वर तृतीय, तपलक्ष्मी भर्ता.....तपलक्ष्मी भर्ता।
सर्वसुन्दर ऋषीश्वर चतुर्थ, आतमसुखकर्ता.....आतमसुखकर्ता।।
भक्ति करूँ झूम-झूम, नृत्य करूँ घूम-घूम, जीवन सुधारूँ रे,
हो प्यारा-प्यारा जीवन सुधारूँ रे.....मैं तो.....।।2।।

श्री जयवान मुनी पंचम, हैं पंचमगतिदाता.....पंचमगतिदाता।
विनयलालस व जयमित्र नाम, गुरुवर सुखदाता.....गुरुवर सुखदाता।
सातों ये ऋद्धि धरें, विहरण इक संग करें, प्रतिमा निहारूँ रे।
हो पावन इनकी प्रतिमा निहारूँ रे.....मैं तो.....।।3।।

मथुरापुर की महामारी, दूर हुई इनसे.....दूर हुई इनसे।
राजा शत्रुघ्न की नगरी, पवित्र हुई इनसे.....पवित्र हुई इनसे।।
''चन्दनामति'' भक्ति करूँ, काया में शक्ति भरूँ, पल-पल पुकारूँ मैं,
हो इन्हीं को पल-पल पुकारूँ रे.....मैं तो.....।।4।।